श्रीभक्ति कान्ति



श्री श्रीभक्ति महारानी सुखदानी सुगुन सोहावन ।
वरनो सिय वल्लभ विनोद हित परम प्रेम पथ पावन ।।
विना द्रवे श्रीभक्ति दया निधि द्रवत न प्रभु मन भावन ।
युगलअनन्यशरन शंतत दृढ़ भक्ति आस चित छावन ।। १ ।।
यद्यपि बहु साधन आराधन योग यज्ञ ब्रत दाना ।
ज्ञान विराग आदि नाना मत श्रुति संमत अभिधाना ।।
पै प्रपंच कलिकाल विगोये वरनहिं संत सुजाना ।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर भक्ति स्वतंत्र वखाना ।। २ ।।
वैधी विधि सें मिली एक पुनि दूजी जानु अनूपा ।
स्वाभाविकी विहार विलाशिनि काढत जिय भव कूपा ।।
रागानुगा सोई कहवावत परमानंद स्वरूपा ।
युगलअनन्यशरन दोनों मधि नव विधि अंग अनूपा ।। ३ ।।
चौंसठ भांति उपाग भजन वर सरस संत श्रुति भाषें ।
श्रीप्रशाद श्रीधाम देश वर बास सेव अभिलाषें ।।
श्रीतुलशिका सरस सेवन आरती दरस सुचि साषे ।
युगलअनन्य अकरन शिष्य बहु बिना विवेक सुराषे ।। ४ ।।
नृपति धान भोजन गर्हित तजि ब्रत एकादशी साधे ।
भोग वासना निषिल निरस करि परिहरि संग असाधे ।।

श्रीसियवर नौमी आदिक ब्रत धारन करि भव बाधे।
युगलअनन्यशरन बहु विधि आरंभन कबहुँ न नाधे ॥ ५ ॥
निंदा त्यागि देय देवन तिमि सकल जीव हित जाने।
विशद विभूति जुगल मन मधि गुनि विषम भावना भाने ॥
श्रीमद्रामायन आदिक वर ग्रन्थ सुपंथ प्रमाने।
युगलअनन्यशरन बहु मत नहिं ग्रन्थ विलोकन ठाने ॥ ६ ॥
नृत्य गीत प्रिय पाठ प्रेम शुभ गाथा गाय रिझावै।
श्रीमूरति अर्चन परसन विधि सहित प्रनाम रचावै ॥
मंत्रराज जप वच मानस तैसेहीं कंठ मधि ध्यावै।
युगलअनन्यशरन निरास ह्वै सीतापति मन भावै ॥ ७ ॥
श्रीरघुबीर विमुष दरसन संभाषन कबहुँ न कीजे।
कोटिन लाभ मित्र ताहू पर तुच्छ समुझि तजि दीजे ॥
संतत सुहृद सुभाव समेतहिं संत कमल पद मीजे।
युगलअनन्यशरन कामादिक असत नीर नहिं भीजे ॥ ८ ॥
इहै अंग रस रंग विधायक भायक भक्त विनोदी।
इनके किये कपाट खुले हिय विषय वासना बोदी ॥
वारहिं वार विचार रहे उर पावे अमल प्रमोदी।
युगलअनन्यशरन षटका खर खाहिश ख्वारी खोदी ॥ ९ ॥
तिलक छाप धनुवान शीश उर कंठ बाहु बिच धारे।
युगल तुलशिका दाम मनोहर सुगल मध्य प्रिय प्यारे ॥
श्रीसीतावर चरन चारु रज परम पुनीत बिचारे।
युगलअनन्यशरन धारन करि मोह मार मद मारे ॥ १० ॥

संत संग वर व्यसन रंगमय आमय हर सुचि सेवे।
मानामर्ष विहाय हाय जुत विरह गिरह दिल देवे॥
प्रश्न अनेक करे प्रीतम मृदु मिलन हेत छल छेवे।
युगलअनन्यशरन सुकृती सोइ लाल ललाई लेवे॥ ११॥
कृपिन कलंक कुटेव कतल करि काम कलपना धोवे।
व्यर्थ विताय देय नहिं पल भर खलक कुसंगति खोवे॥
जागत रहे जगत तंद्रा तजि सुख स्वरूप में सोवे।
युगलअनन्यशरन प्रेमा लहि परा रहस जिय जोवे॥ १२॥
श्रवन सुभग सुंदर गुन सिय पिय हिय लगाय सुनि सरसे।
कामद काम कलंक निवारक कलित कीरतन दरसे॥
रसना नाम सुजस गद गद गिर सहित पुलक प्रिय परसे।
युगलअनन्यशरन दोनों मिलि महा मधुर रस बरसे॥ १३॥
सुमिरन सहज समाधि आधि विन मन गज अनत न जाई।
रूप अनूप स्वाद सुष सागर मगन रहे ललचाई॥
जैसे विरहिनि वाम नटी घट सूरति अचल टिकाई।
युगलअनन्यशरन याही विधि सुमिरन सजन सदाई॥ १४॥
सेवन सरसिज मान विभंजन चरन ललित छवि राशी।
जिमि लोभी लालच वस सेवत भूपति भाव प्रकाशी॥
जिमि नूतन सद शिष्य सुगुरु पद पंकज प्रेम विलाशी।
युगलअनन्यशरन पद सेवन सपदि छोड़ावत फाँसी॥ १५॥
मान मरोर महान पनो तजि दीन भाव ह्वै अरचे।
आठोजाम अकाम रहे चित त्यागि जगत जनु परचे॥

यथा विभव प्रीतम सनेह हित उत्सवादि धन खरचे ।
युगलअनन्यशरन चौगुन चित चैन चाव चषि चरचे ॥ १६ ॥
वंदन चित चंदन द्वंदन गत शोक अभय पद सांचो ।
मनोराज अभिलाष लाष जुत विनय विमल वर वांचो ॥
अभिनंदन निशदिन दशस्यंदन सुवन रंच नहिं आंचो ।
युगलअनन्य अमल अस्तुति सुनि दवत दाह दिल पांचो ॥ १७
दास हुलाश लिये लोचन लखि रहत टरत नहिं टारे ।
प्राननाथ परवस निज करतब आतम सहित निहारे ॥
दृढ़ विश्वास उदास विश्व से ब्रह्मलोक सुष छारे ।
युगलअनन्य सोई सेवक सुचि सेवा हित तन गारे ॥ १८ ॥
सप्तम सख्य सरस सोभा भल भासत भक्त उरस्थल है ।
समता सजे भजे प्रीतम प्रिय हिय हर समें अचंचल है ॥
तत्सुष सुषी निरंतर भीने लीने नेह महस्थल है ।
युगलअनन्यशरन रसमय चित चापत सुधा सुरस थल है ॥१६॥
मन मति चित अभिमान वारि पुनि करन समूह समर्पे ।
क्रिया कलाप अताप दाप दलि परम प्रेम पद सरपे ॥
विषय आतमा शुद्ध रूप निज साधन सहित सुतर्पे ।
युगलअनन्य अनूप भांति आतम सुनि वेद न परपे ॥२०॥
नवधा भक्ति भवेश भाव भल भव्य भावना कारी ।
भरद्वाज हिमवंत सुतादिक श्रवन भक्ति अधिकारी ॥
श्रीमद्वाल्मीक कुंभज मुनिराज भरत छवि धारी ।
श्रीसेवरी सुभगा सुविभीषन सुगल सख्य श्रमहारी ॥२१॥

श्रीहनुमान सुजान सर्व रस सदन दास्यता प्यारी ।
जसी जटायू जगत जाहिरी प्रभु पर सर्वस वारी ॥
ये नवधा मधि मुख्य मनोहर सुष रस खान विहारी ।
युगलअनन्यशरन सुमिरत मुद मानस प्रद अविकारी ॥२२॥
चहुँ युग नौधा सरस साधि सत सहस असंख्य सनेही ।
पाये प्रिय रघुबीर धीर धरि तृन सम परिहरि देही ॥
निश्चल श्रवनादिक के कीन्हें रीझत रशिक सुगेही ।
युगलअनन्यशरन याही बुध बरनहिं भजन निरेही ॥२३॥
सगुन अगुन दो भांति भक्ति भल भेद विचच्छन बरने ।
उभय हेतु भव पार असंशय सब प्रकार मन हरने ॥
सगुना मध्य भेद त्रैविध सत रज तम लखहिं सुतरने ।
युगलअनन्य सकल साधन सें उत्तम जन हित करने ॥२४॥
सात्विक भक्त सोई सुंदर जेहि काम न रंच सतावै ।
भजन करे निष्काम प्रेम हित विषय विलाश बहावै ॥
रोग शोग सम विभव ब्रह्मलोकादिक असद लखावै ।
युगलअनन्यशरन सोई सुचि भक्त सुधाम सिधावै ॥२५॥
राजस भजन मान वैभव हित वाह वाह के कारन है ।
सहित विविधि संकल्प कल्पना निश दिन विषय वहारन है ॥
स्वारथ लिये करत सुमिरन प्रभु प्रीत न रंचक धारन है ।
युगलअनन्य नेह स्वादी नहिं केवल भाव बजारन है ॥२६॥
तामस भजन कलेश दान हित क्रोध कलह जुत जानो ।
कबहुं न शांत होत उर अंतर सदा द्रोह लपटानो ॥

निंदा मांझ महा रुचि पर दुष देत छलन छल थानो ।
युगलअनन्य तमो गुन से सब तौर हृदे डरपानो ॥२७॥
नौधा मध्य त्रिधा सत्वादिक तिन में तीन विचारोगे ।
उत्तम मध्य कनिष्ट आदि अभ्यंतर हिय अवधारोगे ॥
निज मति से सब भेद विलग करि हंस रहस्य सम्हारोगे ।
युगलअनन्य भक्ति सगुना मधि भेद एकाशी धारोगे ॥२८॥
यद्यपि भक्ति स्वरूप एक रस तदपि हृदे अनुशारा ।
नाना भांति भई भासत कोइ सज्जन नैन निहारा ॥
स्वच्छ सुमनि सम रीति विलोकिय तजि गुन विषमय सारा ।
युगलअनन्य भक्ति रानी पर तन मन धन सब वारा ॥२६॥
भक्ति महारानी सुभाव गुन शील न जौ लौं जानी ।
तौ लौं लोक कदंब फिरत रज रूप धूप मत छानी ॥
जेहि छिन सुछबि निधान कृपा से भक्ति हिये रजधानी ।
युगलअनन्यशरन तब सें मुद मोद निरंतर आनी ॥३०॥
श्रीरघुवीर धीर सुमिरन कल क्रिया भेद षट भाषें ।
तामें सिद्ध असिद्ध भाव है सज्जन सद्रसं चाषें ॥
धन तरला तिमि व्यूढ़ विकल्पा सुनत लहत अभिलाषें ।
युगलअनन्य भक्ति कलपवेली की इह सुचि साषें ॥ ३१ ॥
विषय संगरा नेम अवल सोइ नेम चमा सुजानो ।
इनके लच्छन सरस विलच्छन स्वच्छन हृदे समानो ॥
चार क्रिया कहि प्रथम बहुरि द्वै क्रिया रूप पहिचानो ।
युगलअनन्यशरन सबहीं विधि इनहीं को सनमानो ॥३२॥

पंचम तरल तरंग रंगिनी बड़ी उपाधि देखावै।
लोक प्रतिष्ठादिक वैभव बहु भांति प्रबल प्रगटावै॥
छठी जानु उत्साहमयी जो रचना मान रचावै।
युगलअनन्य दंभ लीन्हें प्रभु प्रेम करत हुलसावै॥३३॥
ये षट क्रिया अलौकिक लौकिक अर्थ समुझि उरधारे।
सावधान शंतत रहि के परपंच प्रकार प्रहारे॥
संत संग मन मगन होय नित करे न सपनेहुँ हारे।
युगलअनन्यशरन अनयाशहिं भव सागर पर पारे॥३४॥
घन विच यथा वीजुरी चमकत छनिक लीन हो जाई।
रहे न थिर सो घन तरला थिर होत विनोद बढ़ाई॥
परमानंद प्रकास करे उर तामस तरक तजाई।
युगलअनन्यशरन घन तरला ललित लाभ दरसाई॥३५॥
नाना भाँति वितर्क रचे मन केहि विधि भजिये स्वामी।
सदन निवास सहित बन मधि अकि होय संत अनुगामी॥
किधौं फिरों छिति छाय विरह वर मिलन निमित निज नामी।
युगलअनन्य नाम सुमिरो अकि त्यागि वासना वामी॥३६॥
कीधौं ध्यान धरों नख शिष विष सदृश विषय बन त्यागी।
अथवा दृढ़ विश्वास सहित सोये सुष लहों सुभागी॥
किधौं कथा कलि व्यथा वहावनि सुनो होय अनुरागी।
युगलअनन्य किधौं गुरु पद रज सेवों मन बच पागी॥३७॥
इह विधि अमित मनोरथ करि थिर होत न चित यक ठांई।
व्यूढ़ विकल्पा क्रिया सोई भये अचल मिलत शिव सांई॥

जौन मनोरथ करत तौन मधि येक बनत सरसाई।
युगलअनन्यशरन सत संगति करत सकल बन आई ॥३८॥
नेम कदंब करत शंतत पै सरत न येक यथारथ।
यद्यपि जतन जमावत तद्यपि प्राप्त न प्रिय परमारथ॥
पाय कुसंग कुरंग बढ़त ताही से सजत न स्वारथ।
युगलअनन्यशरन शूर नेही ह्वै जीतो रन मन पारथ।।३९॥
प्रबल विषय पूरब अभ्यासित आय बहुरि लपटाते हैं।
आठ पहर संग्राम निरंतर जीत हार सरसाते हैं॥
जंग जोर के करत जीत जब तब प्रीतम पद पाते हैं।
युगलअनन्यशरन अनुभव बल विषय संग रागाते हैं ॥४०॥
सुमिरत नाम दाम भेंटत बहु मान प्रतिष्ठा बढ़ती है।
शिष्य समूह होत दिन दिन प्रति खेद खराबी चढ़ती है॥
वाह वाह दुख दाह आह की मूरति मन मधि मढ़ती है।
युगलअनन्यशरन पंचईतर तरंग रंगिनी पढ़ती है ॥४१॥
जब बेधे हिय मांझ विष सर तब विह्वल वपु होवे।
विशद भूमिका पाय अकंटक विरह बीज वर बोवे॥
गाय बजाय नवल लालन गुन हँसे कबहुं कहुँ रोवे।
युगलअनन्य सचाई सावित रँग तरंगिनि जोवे ॥४२॥
कथा कीरतन करे सुजस हित जगत जीव जन जोरे।
सने न सांच सनेह सुधा रस किया कराया बोरे॥
दृगन बहाय नीर छल कल जुत अद्भुत रहस हलोरे।
युगलअनन्यशरन उत्साहित अमी मध्य विष घोरे ॥४३।

केवल प्रीतम हेत सकल शुभ करत कांति दमकाती।
जैसे पतिब्रता भूषन पट पहिरि प्रीयतम राती॥
जैसे सूर विजय करि रन बहु सुमति सोहाग समाती।
युगलअनन्यशरन सांची उत्साहमयी दरसाती॥४४॥
ये षट क्रिया उपाधि रहित जब सधे तवै सुष बाढ़े।
तामें अंतराय नव अति वल सूर सिरोमनि काढ़े॥
अंकुर भजन उदय होतहिं सठ मेष समान उपाढ़े।
युगलअनन्यशरन पापी परपंची हिय विच माढ़े॥४५॥
लय विक्षेप कषाय कलुषमय रसा स्वाद दुष राशी।
पंचम अंतराय दारुन अति अप्रनिपत्ति प्रकाशी॥
चार अनर्थ समर्थ अर्थ हर व्यर्थ करें श्रम खाशी।
युगलअनन्यशरन अधमय पुनि पुन्य जनित गर फांशी॥४६॥
नाम ललाम भजन मधि दश विधि है अपराध अगाधे।
सेवन बीच तीश द्वै तिमि चालीश साठ सुष वाधे॥
ताते जौन भांति नाशे सठ साधन सत सोइ साधे।
युगलअनन्यशरन क्रम क्रम करि मिटे अवश्य उपाधे॥४७॥
सात्विक अशन गमन वानी वपु नीन्द पापिनी जीते।
याके हार भये हारे सब सहज सहज दुष रीते॥
साधन सहित सरस अभ्यासत काल अहो निशि बीते।
युगलअनन्यशरन रसना सें रटे राम सह सीते॥४८॥
होय एकांत शांत मन मति करि जन विक्षेप नसावै।
रूप नाम में मगन मनहिं मिलि मलिन कषाय कसावै॥

जौ लौं हृदे कषाय विषय अभिलाष रंच उर भावै।
युगलअनन्यशरन तव लौं नहिं प्रीतम झलक लखावै ॥ ४६ ॥
तिय धन सुवन सनेह सकल निज नकल समल जिय जाने।
जो कदापि उर उठे लहर तौ तुरित भिन्नता ठाने॥
युगल रूप अनुराग रंगे सब विश्व विरस अनुमाने।
युगलअनन्यशरन सुमिरन बल जडता जुदा भुलाने ॥ ५० ॥
लय परतच्छ नींद भाषहिं जन जसी सुकवि शुभ काला।
भजन समे ये रति दुष्टा अति पापिनि महा कराला॥
जनन गिरा सुनि चपल चित्त विच्छेप सोई श्रम शाला।
रसास्वाद तिय आदि रूप गुन भास न सरस रसाला ॥ ५१ ॥
जडता जहर जमात जलन जिय पिय पद देत भुलाई।
अप्रतिपत्ति नाम ताको सुचि संत वदें हर्षाई॥
कोऊ कठिन कलिल प्रेरित उर उदय होत दुषदाई।
युगलअनन्य सियावर सुमिरत त्रास विकार विलाई ॥ ५२ ॥
सुनिये अब अनर्थ नाशन विधि वेद विज्ञ जिमि वरनी।
पापज रोग शोग आये पर हर्ष धरे तजि जरनी॥
देह भोग प्रारब्ध वस्य नहिं हान शोच दिल धरनी।
युगलअनन्यशरन करुना सियराम चारु चित करनी ॥ ५३ ॥
भजन करे मन मोद अधिक युत होय न रंच उदाशी।
हान लाभ समता साजे जिय पावे स्वाद सुधासी॥
वढ़े प्रीति पै घटे न सपनेहुँ सोइ सिद्धांत विभाशी।
युगलअनन्यशरन दुःखज इह अनरथ नसे वलासी ॥ ५४ ॥

सुकृत संभवित मान महातम तेहि मिलि मन अलसावै।
ताको हरे उदार सेव करि दामन सदन बसावै॥
दृढ़ अभ्यास भोग भावन तजि सब सुख अस तरसावै।
युगलअनन्यशरन अमान ह्वै पुन्यज रोग नसावै॥ ५५॥
नाम अपराध असाध महा रुज दश प्रकार सुनि त्यागे।
सत निंदा हरिहर विभेद श्रुति सास्त्र असूया पागे॥
अन अधिकार नाम उपदेश व अर्थ वाद उर रागे।
युगलअनन्यशरन नामहिं बल पाप करत अनुरागे॥ ५६॥
जप तप योग नाम समता गुनि सुनि महत्व नहिं हर्षे।
मान मोह माया मधि मिलि मिलि विषय वासना करषे॥
श्रीसतगुरु अनुशाशन परिहरि सदा प्रमादित तर्षे।
युगलअनन्यशरन दसहूँ तजि नाम भजे रस वर्षे॥ ५७॥
नाम उपाशक संग एक रस नाम अर्थ अभ्यासे।
जो सद्ग्रन्थ नाम प्रतिपादक तिन कहँ सविधि उपासे॥
श्रीरघुवीर विभूति सुतन गुनि तजे जगत भ्रम आसे।
युगलअनन्यशरन अनयाशहिं पावे परम प्रकाशे॥ ५८॥
श्रीशंकर वर बली भागवत ध्रुव प्रहलाद उजागर।
विगत विभीत विभीषन श्रीजुत नारद मुनि मति आगर।
ये षट ललित नाम ज्ञाता तर सुमिरन करे सुधागर।
युगलअनन्य नाम अघ मोचन निमित इहै निज नागर॥ ५९॥
सेवा जनित होत बत्तिस अपराध अगाध अपावन।
चढ़ि पादुका जान मंदिर प्रभु गमन अनर्पित पावन॥

श्रीगुरु निकट मौन ब्रत धारन अनुत्थान अविभावन ।
युगलअनन्यशरन कंवल आवरन सुमंदिर भावन ॥ ६० ॥
तिमिर मांझ सुकुमार मनोहर मूरति तन परसाना ।
रितु संभवित सुपुष्प फलादिक प्रभु हित नहिं अरपाना ॥
सहित समर्थ रहित उत्सव प्रिय कुत्सित अशन पवाना ।
युगलअनन्यशरन समीप प्रभु जगत जीव गुन गाना ॥ ६१ ॥
पर निंदा तिमि परम प्रसंशा हरि गुरु संत विन आना ।
करना सिय वल्लभ समीप इह अति अपराध वषाना ॥
काम कोह कलि कथन एक कर प्रन मन अघ अनखाना ।
युगलअनन्य जहान खेद सजि रोना प्रभु ढिग पाना ॥ ६२ ॥
अधो पवन मोचन संकोचन विना अधिक अघ हेरे ।
निज अस्तुति स्वामी समीप विन दीपक भवन अधेरे ॥
समे विताय करन अरचन नित रहना आलस नेरे ।
पांव पसारि परे प्रीतम ढिग आशन बांधि अनेरे ॥
युगलअनन्य सु सदन मध्य निशि सैनन संवत घेरे ॥ ६३ ॥
सहित अशौच दंडवत प्रभु को करे अघौघ कमावै ।
श्रीसियवर अर्चा वपु लषि जो सपदि न शीश नवावै ॥
परिक्रमा के करत आपनी छाया जो न बचावै ।
युगलअनन्यशरन वर वस अपराध सीस पर लावै ॥६४॥
अर्चन समे लोक कारज हित तजि पूजन जो धावै ।
सुरुचि समेत वसन भूसन सब भांति न प्रिय पहिरावै ॥

मिथ्या वचन वदे मंदिर मधि हांस विलास रचावै ।
युगलअनन्यशरन भच्छन तांबूल सूल उपजावै ॥६५॥
अर्पित वस्तु बहुरि अरपन प्रभु अनुचित अविधि विचारो ।
भूप अन्न शव परसि मलिन पट तेल छुवे अघ धारो ॥
नीच असन गर्हित नीलांबर आदि पाप परिवारो ।
युगलअनन्यशरन औरहुं बहु है अपराध हजारों ॥६६॥
लौकिक महाराज सन जिमि जन अदब हमेशे राषे ।
यासें कोटि असंख्य गुनो प्रभु अंतर नहि नाषे ॥
सावधान संयुक्त रहे तौ अवस नसे सत भाषे ।
युगलअनन्यशरन सियवर भजि भुक्ति मुक्ति धरि ताषे ॥६७॥
किये प्रमाद विशेष बढ़े अपराध सांच ही मानो ।
देश काल विज्ञान लिये प्रभु सेवत सब सुष पानो ॥
श्रीमद्रामायन अमोघ संस्तवहि सुनेम प्रमानो ।
युगलअनन्य मिटे सेवा अपराध सत्य जिय जानो ॥६८॥
ये नव महा उपाधि क्षीनतर साधन करि सब जीते ।
पावे परानंद रूपा निर्गुना भक्ति रस रीते ॥
निष्ठा रति अरु भाव उदय तिमि प्रेम बढ़े अवगीते ।
युगलअनन्यशरन सबहीं दिन रहिये विगत विभीते ॥६९॥
निष्ठा गुच्छ समान भजन तरु रति कलिका अनुकूली ।
भाव कुशुम शुभ सरस सुगंधित प्रेम सुफल अनमूली ॥
ये चारो निर्गुना अंग रस रंग सहित हिय फूली ।
युगलअनन्यशरन सपने पुनि सहे न शिर भव सूली ॥७०॥

सगुना भक्ति विगत दूषन जब प्रौढ़ भाव भल आवै ।
सोई सरस निर्गुना ह्वै पुनि अनुपम सुष उपजावै ॥
षट प्रकार सरनागत संयुत जीव पीव पद पावै ।
युगलअनन्यशरन अनयाशहिं त्रास तरुन ह्वै जावै ॥७१॥
प्रभु अनुकूल क्रिया सबहीं प्रतिकूल त्यागि विश्वासा ।
रक्षक सकल भांति सीतावर उर दृढ़तर अभ्यासा ॥
तन मन धन अर्पन प्रीतम पर आत्म समर्पन खासा ।
युगलअनन्यशरन अग जग प्रभु रूप आप सम दासा ।७२॥
अंतराय की गंध रहे नहि सहज संधि सत सरसे ।
चार अंग जे कहे निर्गुना सो सुष प्रद सुर तरसे ॥
रहे न कान आन लौकिक कछु मतलब पुनि हरि हर से ।
युगलअनन्यशरन पावे मुद मोद मान नहि परसे ॥७३॥
निष्ठा श्रवन आदि नवधा मधि चंचलता नहि भासे ।
एकहिं रस निज नेह तैल धारा समान संकाशे ॥
पर स्वरूप आत्मा सहित जब ध्यान बीच प्रतिकाशे ।
युगलअनन्यशरन सोई रति सज्जन सुमति प्रकाशे ॥७४॥
भाव विलच्छन लच्छन श्रुति मत विशद विचच्छन भाषें ।
पर विभूति जो ध्यान मध्य गत सो सुष इतही चाषें ॥
उह इह एक विभेद रहे नहि जल तरंग अभिलाषें ।
युगलअनन्य युगल करुनावल भाव स्वरूप सुजाषें ॥७५॥
कहुं संयोग वियोग होत कहुँ रुदन गान कहुं हांसी ।
कबहूँ मौन कबहुँ विचित्र बानी सानी सुष राशी ॥

कबहुँ हृदे लय लीन मीन ज्यों कबहुं चकोर विलाशी ।
युगलअनन्यशरन अद्भुत तर प्रेम सुफल परकाशी ॥७६॥
चारो अंग पुष्प पाये पर रस रूपा ह्वै जावै ।
पाँचो मुक्ति करे करतल गत पांच कलेश सिरावै ॥
श्रीसीतावर स्ववस करनि जिय जरनि जमात जुड़ावै ।
युगलअनन्यशरन ज्ञानादिक साधन सिद्ध हरावै ॥७७॥
योग ज्ञान जुत जीव समे पर भ्रष्ट होंहि सब जाने ।
भक्ति एक रस रहत इष्ट बल त्यागि अहंकृत माने ॥
नीच ऊँच सम गनत भेद गत केवल प्रेम पछाने ।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर भक्ति अनन्य प्रमाने ॥७८॥
श्रीसुरसरित विशद धारा सम सुभग वेग सब काला ।
होय निरोध नहीं जतनन बहु कैसेहुं भये विहाला ॥
विना विराग योग जप तप ब्रत मिटे मोह मद माला ।
युगलअनन्यशरन भक्तिहिं से भेंटत श्रीनृप लाला ॥७९॥
जो अभिलाष हिये अंतर निज भक्तिहिं सरस सोहावै ।
तौ सतसंग उमंग निरंतर करि विष विषय बहावै ॥
यदपि अमित मत वेद बीच पर संग संग झलकावै ।
युगलअनन्यशरन उज्वल गुन गरिमा साज सजावै ॥८०॥
भक्ति अमल सिद्धांत मोद मय भ्रांत निवारन वांचे ।
सो सज्जन तन अछत प्रेम लहि सहे न भव भ्रम आंचे ॥
याको अर्थ विचारि सुगुरु मुख सरस साधना रांचे ।
युगलअनन्यशरन सिय पिय पद पाय और नहि यांचे ॥८१॥

परमा परा प्रीति प्रतिभा परमेश प्रकाश प्रसादू ।
पावै परम प्रताप परमपद प्रतिपद हिय अहलादू ॥
प्रीतम प्यार प्रचुर पूरन पन पागे प्रेम अनादू ।
युगलअनन्यशरन पल पल पर उदित नेह निधि नादू ॥८२॥
अखिल अमोल अतोल लोल बिन बिमल वस्तु वर प्यारे ।
अनायाश श्रीभक्ति कृपा बल लहे ललित लय धारे ॥
बाकी रहे न लेश देश वर वेश नृपेश दुलारे ।
युगलअनन्यशरन सब तजि भजि लीजे विभव विहारे ।८३॥
श्रीशाकेत निकेत विभव वर वल्लभ विशद विहारे ।
कलित निकुंज केलि नाना विधि दृग दरसत दुति धारे ॥
लोचन ललित लखे लोनी तसवीह ललन सुकुमारे ।
युगलअनन्य कदंब मोद प्रभु भजत हमेश सवारे ॥ ८४ ॥
क्या मतलब अब मुझे भला जो करे खुशामत अदनो की ।
महाराज से संग रंग फिरि साथ कहो क्या लदनो की ॥
संग सुगुरु सतसंग भया क्यों ताके मुख दुर्वदनो की ।
युगलअनन्य अमंद मोद सब तौर स्वाद सुष सदनो की ॥८५॥
लौकिक धन अति अशुचि सुरुचि हर सप्त उपाधि सजाये ।
भूमि नीर पावक तस्कर नृप वीज विनाश लजाये ॥
अंतराय नाना संयुत तेहि त्यागि भक्ति धन भाये ।
युगलअनन्यशरन सुमिरन सजि जन्म सुतरु सु फलाये ॥ ८६ ॥
रे मन नाम रूप मधि सब विधि निशदिन मगन रहाकर ।
इधर उधर की आस हांस भव फांस निवास चहाकर ॥

सिय वल्लभ आधीन दीन निज सहज स्वरूप कहाकर ।
युगलअनन्य अदोष तोष तरसत गुरु शीष गहाकर ॥ ८७ ॥
शंतत सावधानताई गहि विरह विभूति मलाकर ।
सीतावर संबंध सार भजि मायिक दलन दलाकर ॥
सरस सजाती संत संग सजि तेहि प्रिय पंथ चलाकर ।
युगलअनन्य दशा नाजुक निज नेही कलित कलाकर ॥ ८८ ॥
भक्ति महारानी पद पंकज रज निज भाल लगाये ।
अनुपम अमल अजूब खूब अति अनुभव जिकर जगाये ॥
भरम भावना भूत भूत मलमूत अपूत भगाये ।
युगलअनन्य भक्ति करुना लहि जग ठग से न ठगाये ॥ ८९ ॥
सिय जीवन जस सरस नाम अभिराम भजत दिन राती ।
लीन होत चित चपल अचल थल लवन नीर सम भाती ॥
अमल कनक सुचि कलित कांत प्रिय पाय प्रपंच पराती ।
युगलअनन्यशरन रंचक नहिं रहे विकल्प विजाती ॥ ९० ॥
सिय वल्लभ पद कंज मंजु मधि रमत कुतार तुराई ।
भुक्ति मुक्ति अनयाश रास सुष दुख दुर्गंध दुराई ॥
पावे प्रेम प्रकाश खास मनि महल सनेह सुराई ।
युगलअनन्य अशन जेंवत जिमि छुत कृश दरद उराई ॥ ९१ ॥
परम पियूषमयी मूरति मन मोहनि मति हर लेनी ।
पंच प्रपंच पार प्रीतम प्रिय प्रान दाम दुति देनी ॥
युगल रूप परिकर प्रमोद प्रद ललित लसत शुचि श्रेणी ।
युगलअनन्य अजूब खूब कल कृपा सुचारु त्रिवेणी ॥ ९२ ॥

श्रम साधन बाधन विहाय हिय हाय वहाय दिया है।
भ्रम भाजन लाजन लजाय जलवाय जलूस छिया है॥
क्रम कारन भारन नसाय अलसाय हुलाश हिया है।
युगलअनन्य अताय काय जित हेरो तितहिं पिया है ॥६३॥
चातक चतुर चकोर मोर रति रस जसमयी लई है।
मीन अदीन फनीश कृपिन पन पीन सुप्रीति मई है॥
नित्य नवीन नेह निश दिन पल पांव नही जुदई है।
युगलअनन्य कृपाल कृपा से सुछवि सुछान छई है ॥६४॥
केवल भक्ति महारानी की कृपा कलित चित चाहो।
बार बार उमगाय हृदे गुन गाय सुमन उत्साहो॥
विविधि वासना तर्क फर्क करि कर्क नर्क सम दाहो।
युगलअनन्यशरन सीतावर शरन नेह निर्वाहो ॥६५॥
माते रहो निरंतर मुदमय मधुर मनोहर पीते।
ताते सहो लहो शीतल सुष चहो सुजीवन जीते॥
नाते दहो दरद दाता दिल महो गहो गुन गीते।
युगलअनन्य युगल बातें दिन रातें कहो सुरीते ॥६६॥
जेतो सुष सरकार सुभग श्रीनृपति कुमार सोहावन।
तेतो सकल सजत सुमिरन उर उदय होत प्रिय पावन॥
ताते भजन सार सर्वोपर संत सुजन मन भावन।
युगलअनन्य सनेह सुधा सुचि शंतत जिगर जुड़ावन ॥६७॥
श्री श्रीभक्ति महारानी निज कृपा लही अलबेली।
सषी हुती बहुत दिन से भइ हरित मनोरथ वेली॥

रैन ऐन चित चाह दाह विन प्रीतम हेत अकेली।
युगलअनन्य अली आतुर कब लखिहैं नित नव केली ॥६८॥
विना भक्तिवर विमल विभौ बहु बूड़े विज्ञ विकारी।
बन बन फिरें उदास भास सुष लेश नही सुषकारी ॥
वेष अशेष रचे चौगुन चित पचे मचे भ्रम भारी।
युगलअनन्यशरन सुमिरत सत रहित न भेंट खरारी ॥६६॥
मेधा महा मोद मांती राती रस रूप रंगीली।
बेधा विशिष विचित्र प्रीति हिय लक्ष्य रहस्य रसीली ॥
द्वेधा भाव सुभाव सुसम सजि सज्जन शरन सजीली।
युगलअनन्यशरन नौधा प्रिय प्रेमा परा छबीली ॥१००॥
प्रज्ञा प्रभा प्रतीत पाय पटु प्रीतम प्रीत प्रलापी ॥
प्रबल प्रचंड प्रपंच पारपन पावन राग अलापी ॥
पल पल पर पट पीत सुरति सजि भजि रशिकेश मिलापी।
युगलअनन्य लगन लागी ज्यों मधुर सुमेह कलापी ॥१०१॥
नौधा मांह मगन मानस करि दसधा दमक देखाती है।
अंतर परा प्रभा भासित रस रूपा सुरस चषाती है॥
श्रीसीता वल्लभ दुर्लभ सुष ततसुष छवि झलकाती है।
युगलअनन्य अली उज्वल रस बूंद विमल बरसाती है॥१०२॥
राम रशिक रस रंग रमित सुष समित समाज जहानी।
धाम निवास आस सिय पिय दृढ़ खास दास दुति दानी ॥
दाम नाम नित नेह सहित हिय फिरत हमेश रसानी।
युगलअनन्यशरन प्रीतम मधि मगन दूध ज्यों पानी ॥१०३॥

भक्ति महारानी करुना करि जेहि हिय वास वसावें ।
तेहि आधीन अखिल रस जस सुष सौगुन स्वाद रसावें ॥
सोई अमल भक्त ज्ञानी विज्ञानी रशिक लसावें ।
युगलअनन्य प्रमोद परम लहि दोऊ हरित हँसावें ॥१०४॥
आपा वारि दीजिये दिलवर सिय रघुवर के ऊपर ।
है येही निर्वेद ज्ञान वर भक्ति विचित्रा धूपर ॥
सांचो सजन सनेह सोहावन शौक आठवीं भूपर ।
युगलअनन्य संत संगति वल अवल सवल दिल दूपर ।१०५॥
सच्चित मोद मूल मंगलमय महा मोद मृदु मंदिर ।
मन मति गति गुन ज्ञान भान पर चारु चरित चित चंदिर ॥
भक्ति महारानी परवस प्रिय प्रेम छेम प्रद पंदिर ।
युगलअनन्य सिया वल्लभ सुचि सील सुभाव सुशंदिर ॥१०६॥
भक्ति महारानी सुष षानी सिय पिय निकट निवाशिनि ।
जिसपै नेक निगाह करे तेहि दाह हरे रस राशिनि ॥
महिमा अगम अथाह अलौकिक वदहिं विज्ञवर वाशिनि ।
युगलअनन्य अली को कीजे नित्य निकुंज खवाशिनि ॥१०७॥
ब्रह्म लीन विज्ञान पीन सनकादिक क्षीन बिहारी ।
शुकदेवादि महामुनि गुरु विधि शेस गनेश पुरारी ॥
तव पद प्रीति प्रतीति निरंतर चाहत मान विसारी ।
युगलअनन्य अधम ऐसो को जेहि न सुरुचि छविवारी ॥१०८॥
कोटिन कलप कलाप क्रिया करि पचो मचो श्रम साधन में ।
पै पावो नहिं नेह विना निज नित्य स्वरूप उपाधन में ॥

अविरल अनपायनी भक्ति विन वृथा जीवना बोधन में ॥
युगलअनन्यशरन सुष किंचित मीत न वहुमत नाधन में ॥१०९॥
सिय वल्लभ के होय रहो मत दहो दशो दिशि ज्वाला है।
किसही तरफ वरफ नाहीं निज नेह मांहि मुद माला है॥
सुष रस परस पवन नाहीं कहुँ केवल कठिन कशाला है।
युगलअनन्य अदाग राग रस सागर श्रीनृपलाला ॥११०॥
विन वल्लभ वर वैन श्रवन चित चैन ऐन क्यों दरसे।
चातक चाव भाव वरधन हित विना सुघन को वरसे॥
चतुर चकोर तापहारी विन विधू हृदे को सरसे।
युगलअनन्य आय मेरो मन हरन सुचुंवक तरसे॥१११॥
नवधा भक्ति मध्य दसधा पुनि परा सुभग रस रूपा है।
साधन शिद्ध समे सरसत सुष समुझे सुजन स्वरूपा है॥
भक्ति महारानी अंतर सब जो कुछ श्रुतिन निरूपा है।
युगलअनन्य भजन विन सियवर पड़े चतुर भव कूपा है॥११२॥
विमल भक्ति अंतर रंचक नहिं अंतराय कहुँ सुनिये।
सिय वल्लभ परमेश परं वल शीश विराजत गुनिये॥
कहो कौन की शक्ति वद नजर निरखे वल मधि हुनिये।
युगलअनन्यशरन सीतावर संध्य समुझि भव भुनिये॥११३॥
अवलंवन सिरमौर सोहागिनि भक्ति किये भव तरिये।
प्रभु प्रतिकूल शूल साचित भव दहन मांझ नहि जरिये॥
विशद भक्ति आशक्ति बिना सब मत हत हिय गुनि धरिये।
युगलअनन्य प्रिया प्रीतम प्रिय भजन खजाना भरिये॥११४॥

निर्विकार आकार रंग रस धार प्यार पन भीनन।
सर्वोपर सुष सार सिरोमनि सिय सुन्दर मनि कीनन॥
पावें सुजन सरोज वदन अनयास तोम तम छीनन।
युगलअनन्य महारानी श्रीभक्ति पाय जग जीरन॥ ११५॥
धन्य धन्य धन्याति धन्य श्रीधन्या भक्ति विचित्रा।
अहो भाग अनुराग जासु दृढ़ होवे सुपद पवित्रा॥
पावै परानंद प्रीतम पदु पार प्रपंच अमित्रा।
युगलअनन्यशरन सरसे सत साज सुभाव सुमित्रा॥ ११६॥
संयम रहित औषधी गुन सब भांति करे जिय जोहो।
पांचो विषय समेत भक्ति दृढ़ करत न माया मोहो॥
यामें गांस आस पूरन कर सुगुरु पास सुष सोहो।
युगलअनन्य भजन साजन सज्ञु नहि सिय श्याम विछोहो॥११७
सुधा सरोवर स्वच्छ सहस शशि शीतल सहज सोहाई।
उमा रमा रति गिरा सुंदरी लखिये ललित लोनाई॥
अमित पयोधि गंभीर धीर शत सहस सुमेर उँचाई।
युगलअनन्य महारानी श्रीभक्ति विभूति बड़ाई॥ ११८॥
पंच प्रकार कर्म वरनत विद विमल विवेक विलाशी।
नित्य निमित्त निषिद्ध काम्य प्रायश्चित्तादि सुवासी॥
संध्या वंदनादि मष दुख प्रद काम कलंक निवाशी।
युगलअनन्य पाप वारन हित कर्म प्रपंच प्रकाशी॥ ११९॥
काम्य निषिद्ध तजे तम गम सम प्रायश्चित्त सम्हारे।
बिमल विराग बोध संभव सुचि समे उभय श्रम भारे॥

केवल भक्ति महारानी कमनीय कर्म उर धारे।
युगलअनन्यशरन सनेह पर कर्म धर्म सब वारे ॥ १२० ॥
प्रज्ञा प्रभा प्रतीत पाय पटु प्रीतम प्रीति प्रलापी।
प्रवल प्रचंड प्रपंच पार पन पावन राग अलापी ॥
पल पल पर पट पीत सुरति सजि भजि चित चरन मिलापी।
युगलअनन्य लगन लागी ज्यों मधुर सुमेह कलापी ॥१२१॥
नौधा मांह मगन मानस करि दसधा दमक देखाई।
अंतर परा प्रभा भाशी रस रूपा छवि चमकाई ॥
श्रीसीता वल्लभ दुर्लभ सद तत्सुष सुधा पिवाई।
युगलअनन्य उदार भक्ति कल कृपा सुरस वरसाई ॥ १२२ ॥
सत रज तम गम गीत रीत अपुनीत अनीत निकाशी।
सत मत रत गत ज्ञेय ध्येय धुनि धवल विचित्र विकाशी ॥
अग जग अलग महा दुखमय मग ठग विरहित अविनाशी।
युगलअनन्यशरन सुमिरन सजि तजिये तृगुन तमाशी ॥१२३॥
विशद विन्दु वल्लभ विनोद वपु वीज विहार विलोके।
पलक परे पावे नाहिन टक टकी लगाय विशोके ॥
निरखत खुले कपाट कुंज कमनीय लखें सुष थोके।
युगलअनन्यशरन सपने मधि नहिं आवे भव ओके ॥ १२४ ॥
चिवुक बीच वल्लभ अनूप पद पंकज मांझ निहारे।
होय एकांत भ्रांत चिंता चय नीरस नीम विचारे ॥
आसा जारि सजे आसन दृढ़ सहज शरीर सम्हारे।
युगलानन्य सुविन्दु विलोकत प्रीतम पास पियारे ॥१२५॥

आलसहीं के विवस भक्ति रस स्वाद विषाद सनायो है।
लाल सदंभ खंभ अंतर दिल गाड़ि जहान जनायो है॥
सुधि बुधि विषय विलाश वीच बहवाय मनोज मनायो है।
युगलानन्यशरन सीतावर विमुख सुवेष बनायो है॥१२६॥
को हम कौन निकेत हेत केहि कारन तन मन पाये हैं।
है मेरो मालक पालक को मरम मुराद दवाये हैं॥
किसके साथ सरस सुंदर संवंध अवंध गँवाये हैं।
युगलानन्य सनेह सजन विन बार बार पछताये हैं॥१२७॥
औगुन लेश नहीं कतहूँ गुन पूरन प्रगट प्रकाशित है।
द्रुम अंदर कंटक सोऊ सिर साया सजत विभाशित है॥
मधुर मराल सुमति मानस मधि मगन किये चित आसित है।
युगलअनन्य कदंव दृश्य सिय श्याम विभूति विलाशित है॥१२८
निज समान अभिमान षान वेमान न आन निहारे।
महा मलीन दीन कृतहन धन हीन सुचित्त विचारे।
औगुन अखिल कलंक काम कुल कारन आप सम्हारे।
युगलअनन्यशरन सुचि गुन सिय श्याम कृपा अवधारे।१२६॥
चौदह करन जरन जुड़वन हित अहित अशेष निकारे।
थाना सवल शिकोहदार सव तौर गौर जुत धारे॥
निरखत परषत रहे राह रस रूप अनूप अपारे।
युगलअनन्यशरन इत उत की सूरति सकल सम्हारे॥१३०॥
सरस समाधि उपाधि आधि भव व्याधि विहीन विचारो।
अंतर वाहर करन ध्येय सुष लीन निशोत निहारो॥

संप्रज्ञात असंप्रज्ञातहुँ जुगल रहस इत धारो ।
युगलअनन्यशरन रस निधि छवि छकत सुधामय धारी ॥१३१॥
धवल धारणा धारि धरम धुर धरन शरन सुषदायक ।
सुन्दर सरो पाय अवलोकत अमल अंग रस नायक ॥
सावधान सब भांति होय पुनि ध्यान समाधि सहायक ।
युगलअनन्य भजन भावन जुत जलद सुचित्त अमायक ॥१३२॥
निर्विकार निज नेह निरालम नित्य नवीन नेहायत है ।
निराकार साकार सहित सुचि समुझें संत सिफायत है ॥
जीव ईश सुख संधि स्वच्छ सद सौंपत सहज विलायत है ।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर सुमिरन शूर सुजायत है ॥ १३३॥
मानुष वपुष प्रधान प्रेम पन सदन सोहावन साजन है ।
प्रीतम मिलन निमित्त चित्त चिंतामनि अनुपम भाजन है ॥
अमल अमोल अगाध वाध विन धाम देन हित साजन है ।
युगलअनन्यशरन सो सुष सर सूषत शतत अकाजन है ॥ १३४॥
वृथा एकहूँ स्वांस रास सुष षोना निज नादानी है ।
है अथीर ज्यों तीर तरल गति बहा जात सम पानी है ॥
प्राकृत तन मन त्रिलग होय प्रभु सुमिरो निशा सिरानी है ।
युगलअनन्य नाम करुना वल पाय मौज सुलतानी है ॥१३५॥
मन माशूक मिलाय मोहव्वत मजा मनौवर मशनद है ।
वन विनोद कल केलि कला लखि माने आमत हशमद है ॥
अतन जमीन जतन जलवा करि कायम करम असंमद है ।
युगलानन्य नाम सुमिरत कोउ काल न युष्मद असमद है ॥१३६

पावक पौन गौन गुन गुनि सुनि परत सुधुनि सरसानी।
नावक तीर समान लगे मन अमन होय रुचि तानी॥
जावक चरन सरोज चारु चहि उरझे छवि दिल जानी।
युगलअनन्यशरन सौगम सब सुमिरत श्रीधनुपानी ॥ १३७॥
वढ़ी भक्ति रसधार सार सुष कहो किस तरह रुकती है।
चढ़ी चित्त वर वृत्ति व्योम विच फेर न नीचे झुकती है॥
कढ़ी काम बासना दाह दिल रही कौन थल मुकुती है।
युगलानन्यशरन सुमिरन निज नेह निशानी लुकती है ॥१३८।
जेते नाता दिव्य भव्यवर तेते सियवर संगी।
पति पतनी सुत तात भ्रात नृप प्रजा विलाश सुरंगी॥
शेषी शेष अधार अमल आधेय रहस्य उमंगी।
युगलअनन्य सरस सुंदर संबंध सनेह तरंगी ॥ १३९॥
देह आतमा पति पतनी सुत तात समान सदाई।
पाले श्रीरघुवीर धीर निज ईश विभव दरसाई॥
ऐसे सरस सनेही सन जो रच्यो न प्रेम निकाई।
युगलअनन्यशरन ताके सम अधम न आन लखाई ॥ १४०॥
सिय वल्लभ भजु भाव चाव जुत जीवन सफल सही है।
आन विधान विकल्प खान सब सूझत दाह दही है॥
निर्मल नेह पंथ पावन प्रिय पूरन प्रेम मही है।
युगलअनन्य उपाधि व्याधि विन सुमिरन सुगुन गही है।१४१।
विना भजन सरकार राम सुख सार अधार कहां है।
श्रुति सत मत सिद्धांत स्वच्छ शुभ सबहीं भांति लहा है॥

नाम निशानी नेह नित्य नव श्रीगुरु निकट गहा है।
युगलअनन्यशरन सुमिरन सुचि सरसत मौज महा है ॥१४२॥
खाहिश खलक भार लादे अहलादे रहित अतंती है।
फाहिस बहुत विकार भरे हिय हरे न सदा सुखंती है॥
आपा थापि रहे वेनाहक वाहक बुद्धि वहंती है।
युगलअनन्य विवेक विगत देषो दंभिन की गिनती है ॥१४३॥
वेष विमल सुचि संत सजाये रहस रीत गज दंती है।
राग द्वेष दुख रेष खचाये मति गति मोह मिलंती है॥
प्रभु प्रतिकूल क्रिया सानी रति असति सुवोध छलंती है।
युगलअनन्यशरन जुगनू सम ठग दंभिन की गिनती है॥१४४॥
मीचे नैन रहत आलस वस नीरस नेह निछंती है।
कीचे वीच पगे पांवर मन तन में आह हसंती है॥
संत सनेहवंत पूजे नहिं निज मति मदन मठंती है।
युगलानन्य जहान वीच दर दर दंभिन की गिनती है॥ १४५ ॥
खान पान सनमान प्रान सम विशम भावना पंती है।
हान लाभ पहिचान न हरगिज भांग रैन दिन छंती है॥
दुर्मति दाग दगाये दिल हरसायत होश हलंती है।
युगलअनन्यशरन दुनिये अंदर दंभिन की गिनती है ॥१४६॥
बात घात उत्पात रात दिन छिन नहिं मौज चढ़ंती है।
बाद बिबाद उपाध ब्याध उर अंतर अधिक बढ़ंती है॥
याद सरस रस स्वाद न पल भर जर वर वचन कढ़ंती है।
युगलानन्य दगाबाजी जुत जग दंभिन की गिनती है॥१४७॥

चौंके रहे संत शाहेब सन तन धन अतन छजंती है।
बाहर विषय बहुत प्यारी सपने नहिं मौज एकंती है॥
जो कोऊ कुछ कहे वस्तु वर सुनि गुनि जिगर जलंती है।
युगलअनन्यशरन जुगनू सम ठग दंभिन की गिनती है॥१४८॥
जौ लौं दंभ दाह अंतर तौ लौं नहिं मोद विचारोगे।
सांचो सहज सनेह धारि सिय लाल स्वरूप निहारोगे॥
कपट कलाई काम कलाकृत खोय खैर खुद सारोगे।
युगलअनन्यशरन कीरति कल वचन विचित्र उचारोगे॥१४६॥
सिय बल्लभ अपनाय जाय जग जाल जवाल जलावो।
जीवन जन्म सुफल सुन्दर जेहि समें रहस्य फलावो॥
विविधि वासना वीज विलय करि तृगुन तमीज तलावो।
युगलअनन्यशरन मानस मद मान मुराद मलावो॥१५०॥
सीताराम सनेह सुधा रस मांझ मगन मन कीजे।
दोनों लोक शोक सम समुझत छाया छल छिति छीजे॥
अनुभव अमल अदाग राग गुन उदय होय रस पीजे।
युगलअनन्य माधुरी पीवत जुग जुगांत लौ जीजे॥१५१॥
भजन भावना निरत निरंतर अष्ट पाश मद त्यागी।
रिन शंका भय लाज जुगुप्सा शील वृत्त कुल रागी॥
धन जोवन गुन राज काज कुल विद्या रूप सुभागी।
युगलअनन्य पास मद परिहरि होय अशल अनुरागी॥१५२॥
भूमि नीर पवमान अनल आकाश चंद रवि आतम।
इनके सहित प्रगट आठो मद असद तृगुन तन तातम॥

वसन चाह चिंता देशांतर गमन वाम रुचिरातम।
बाहन चित संशय हिंसा विद्यादि महान महातम ॥१५३॥
वसु मद पास रास दुख दारुन तजे सनेह सचाई।
सोहे विमल विराग भक्तिवर ज्ञान ध्यान रशिकाई॥
जौ लौं लोक शोक संकुल उर तौ लौ वृथा कमाई।
युगलअनन्य अचाह रहे पर मिलत मधुर रघुराई॥१५४॥
सियवर विरह व्यथा व्याकुल बौरी भौंरी सी आवै।
दौरी फिरत मनहुँ मतवारी मदन ताप तन तावे॥
बूझत निठुर न कोउ सब जग ठग मुरछित होश गँवावे।
युगलअनन्य अली नेही की सुरति न श्याम करावे॥१५५॥
ऐसी कौन भई मो सें तकसीर सोऊ कहि दीजे।
नातो जान निकशता अय दिलदार खुशी दिल कीजे॥
तेरे लिये जहान हान सब तौर सही कर मीजे।
युगलअनन्य दयाल लाल विन देखे किस विधि जीजे॥१५६॥
जो कुछ नाथ भई अविहित मति विश्व विरस रति कीये।
सो दयाल दृग देखि दूर करु जेहि प्रकार जन जीये॥
याही छन से सकल विकलपन वपुष तीनहूँ छीये।
युगलअनन्यशरन विननी सुनि वसहु दंपती हीये॥१५७॥
हे श्रीजनक किशोरी प्रीतम प्रान पियारे मेरे।
कृपा कोश करुना अदोस रस एक भरोसे तेरे॥
महा मोह मनसिज मायल मन विविधि वासना घेरे।
युगलअनन्य आश तव पद गहि डरत न सांझ सबेरे॥१५८॥

श्रीसियवर अनुकूल क्रिया सब करे त्यागि प्रतिकूला ।
रक्षा मधि विश्वास एक रस निरस आस श्रम शूला ॥
रक्षित जन गुन कथन इष्ट पहँ कृपिन भाव अनमूला ।
युगलानन्य आतमा अरपन षटधा शरन सुमूला ॥१५६॥
सात भांति निज जीव भेद श्रुति संत सुसंवत जानो ।
नित्य बद्ध पुनि बद्ध विषय रत विषयी प्रगट पछानो ॥
मधुर मुमुक्षू मुक्त नित्य तिमि जीवन मुक्त प्रमानो ।
युगलअनन्यशरन सिय पिय प्रिय नाम अर्थ मधि मानो ॥१६०॥
सबको उचित सीय वल्लभ गुन नाम गान निशि वासर ।
विमुख भये हिय हाय होय नहि पाइय कबहुं सुधासर ॥
सावधान शंतत रहिये गहिये गुन नित्य प्रभासर ।
युगलअनन्यशरन रमिये सियराम रूप सुखमासर ॥१६१॥
श्रीसीता बल्लभ विनोद वर बिशद कथा कमनीया ।
सुधासार सतसार परसमनि चिंतामनि रमनीया ॥
सहज समाधि विधायक भव भ्रम भान वितन समनीया ।
युगलअनन्यशरन कल कीरति सम सुष नहिं वरनीया ॥१६२॥
श्रद्धा प्रथम महान संग नव रंग उमंग बहोरी ।
भजन स्वरूप प्रश्न नाना विधि करि रुचि जतन करोरी ॥
पंच अनर्थ सहज नाशे तब भासे रहस अजोरी ।
युगलअनन्यशरन प्रेमा पद पहुंचे जुगल हुजूरी ॥१६३॥
जौ लौ प्रेम लक्षना लच्छन उदय हृदे नहि प्यारे ।
तौ लौ नेम नाम मंगलमय एकहुं पल न विसारे ॥

करे सदा सतसंग स्वाद सजि सज्जन चरन जोहारे।
युगलअनन्य इहै मारग गहि मुदमय सांझ सकारे ॥१६४॥
मृखा अनेक जतन जिय जोहत मोहत मन मति मंदा।
सबल बिमल विश्वास गहत नहि जो काटत भ्रम फंदा ॥
तुझे कौन चिंता तन मन की व्यर्थ सहत दुष द्वंदा।
युगलअनन्य भार इह छर सब तिसहिं जिसहिं का वंदा ॥१६५॥
न्याश रहस सुचि सरस सकल विधि अति रसज्ञ जन जाने।
जाके किये हिये सीतावर रूप झलक झलकाने ॥
मन बच तन त्रैधा विभेद तेहि अंतर समुझु सयाने।
युगलानन्य झीन मारग प्रभु करुना पाय पयाने ॥१६६॥
मानस मध्य भेद द्वैधा पुनि सुनि सनेह सरसावो।
भरन न्याश आतमा न्याश शुभ दृढ़ मत मन मधि ल्यावो ॥
भरन न्याश सुचि सानुकूल आदिक पांचो धिय ध्यावो।
युगलअनन्यशरन सर्वश अरपन आतम रति भावो ॥१६७॥
वाचिक न्याश सरस सुंदर शुभ सुगम सकल विधि मानो।
सकृत शरन प्रभु पाश पाहि जुत वदत हाय हिय हानो ॥
देश काल गति लेश न चाहत आरत हेतु प्रमानो।
युगलानन्य कपट वर्जित ह्वै बचन शरन सुख सानो ॥१६८॥
श्रीरघुबर्य विभूषन सुंदर आयुध जौन विराजे।
तामे लीन करे तत्वादिक मन मति सकल समाजे ॥
निज स्वरूप सुष रूप कौस्तुभमनि मधि छकि छवि छाजे।
युगलअनन्य वपुष अरपन करि परम प्रमोद समाजे ॥१६९॥

भली भक्ति की नीव सीव सुष सर्वस स्वाद सजाई।
कली मिशाल मोहब्बत पिय की सहजहिं सहज खिलाई॥
गली नवीन प्रवीन नेह की नाजुक जाय समाई।
युगलअनन्यशरन वीना वर वल्लभ विरह वजाई॥१७०॥
उज्वल अमल अनूप स्वादमय रहस उपाश न गाऊँ।
जाके कहत सुनत शंतत सिय श्याम माधुरी पाऊँ॥
गति अनन्यता लिये सुदृढ़ मत लच्छन सरस सुनाऊँ।
युगलअनन्यशरन रशिकन की पांशु सुशीश चढ़ाऊँ॥ १७१॥
महाराज मनि मुकुट मंत्र सर्वेश्वर रस निधि पाई।
फूले फिरत उमंग रंग मत मंत्र अनेक विहाई॥
सीताराम अनन्य संग निशिद्योश सजे सुषछाई।
युगलानन्यशरन सीतावर नेह नगर मन भाई॥ १७२॥
माला मधुर युगल गल शोभित अवध सरस तरु प्यारी।
श्री श्रीअवध पराग तिलक सुचि शीश कांति निज न्यारी॥
श्रीशाकेत निवास निरंतर निर्विकार ब्रत धारी।
युगलानन्य अनन्य उपाशक उज्वल रीत विचारी॥ १७३॥
अमित कोटि अवतार सहित अवतारी जुग कर जोरे।
सेवे सदा सभा संकित सह निशदिन निरखि निहोरे॥
स्वयं समर्थ सवल सब लायक रघुनायक चित चोरे।
युगलअनन्यशरन परत्व जोइ कहो लगे सोइ थोरे॥ १७४॥
श्रीरामानुज लखन अंश से संभव छीर निवाशी।
तैसेहि शत्रुशाल वैभव सें भये विश्नु गुन राशी॥

भव्य भावना भवन भरत ते उद्भव भौम विभाशी।
युगलानन्यशरन ईशाधिप राम विचित्र विलाशी ॥ १७५ ॥
अवतारी अवतार सकल श्रीचरन अंश से जानो।
शंतत सरसीरुह सुंदर पद सेवा शक्त पछानो ॥
अग जग जिते जीव जगती मधि सिध साधक अनुमानो।
युगलअनन्यशरन नष निर्गत प्रभा ब्रह्म हिय आनो ॥ १७६ ॥
श्रीसीतापति परंतत्व सुपरत्व सुनत सकुचावें।
ते पांवर पाखंड निरत अघ रूप संत श्रुति गावें ॥
कहत कपोल कलपना करि सठ हठ वस वाद बढ़ावें।
युगलानन्य अधम ऐसे सुख शांत न कबहुँ समावे ॥ १७७ ॥
सर्वोपर परमेश परावर पति पद प्रेम न ठाने।
माते महा मोद मदिरा मूरख मनमुखी बखाने ॥
सुन्यो न वैन रशिक सतगुरु वर वदन विशेष सोहाने।
युगलानन्य अनेक जन्म लगि वहकत फिरहिं भुलाने ॥ १७८ ॥
क्या कहिये उनकी मति गति रति जिन्हे न सिय पिय प्यारे।
सुधा शिंधु सरजू समीप वशि कूप खनत सठ खारे ॥
देव धेनु तरु अमर भजन तजि कांच कर्म हित हारे।
युगलअनन्यशरन संकटमय दशा संकटा धारे ॥ १७९ ॥
जे अवतार उदार लोक हित वेद वदहिं वरबानी।
ते सब कला अंश आवेशज गुने हिये सुष मानी ॥
अग जग जीव जिते जगतीतल तिते अंश अनुमानी।
युगलअनन्य विरोध जगत तजि भजिये सारंग पानी ॥ १८० ॥

लख्यो नैन जिन तेज पुंज रवि एक बार जिय जानी ।
तिनको मत खद्योत जोत सब सहजहिं सकल देषानी ॥
जो कोउ कहे प्रकाश दीप मम सम दिनेश हठ ठानी ।
युगलानन्यशरन रंचक जिय सुनत न कबहुँ गलानी ॥१८१॥
सूर सुवन चौथो थिरता तव जब श्रीनाम धेआवे ।
नीरध तनय तनय अद्भुततर पल पल पल उदय बढ़ावे ॥
सुर गुरु मध्य धन्य सोई जन तन मन लगन लगावे ।
युगलअनन्यशरन भेषज भल श्रीगुरु शरन सोहावे ॥ १८२ ॥
छन छन ध्यान नवल मूरति मन मोहन सिय पिय लावे ।
गाथा रामायनी माननी श्रवन सहित नित गावे ॥
सुमिरन नेम समेत वंदना नौधा हृदे दृढ़ावे ।
युगलानन्यशरन सीतापति विमुख सदा पछतावे ॥ १८३ ॥
विचरे अवनि अवनिजापति पद पंकज प्रेम पगे हैं ।
काम धेनु द्रुम काम महामनि पाहन पशू लगे हैं ॥
नीरध चुलुक समान महा रवि सम खद्योत जगे हैं ।
युगलानन्यशरन भूपति पति किंकर नीच नगे हैं ॥ १८४ ॥
कर्मा कर्म विकर्म भर्म तजि भजहिं सनेह समेता ।
अमल अनन्य भावना दृढ़ उर प्रीति प्रतीति उपेता ॥
करे न चाव चाह नाना मत गने न स्याह सपेता ।
युगलअनन्यशरन तिनको भव पार करत जन नेता ॥ १८५ ॥
होत बिलंब लेश तिन कहँ नहिं जे सियराम उपाशी ।
मन मति लीन किये जे सियवर वीच विहाय उदाशी ॥

सने सनेह श्याम सुंदर सुष काटि काल कृत फांशी ।
युगलअनन्यशरन प्रीतम प्रिय निशदिन विशद विलाशी ॥१८६॥
जो चित सहज मांहि लागे नहि तौ करु जतन विचारी ।
होय एकांत कतहुं सरिता तट दृढ़ अभ्यास सुधारी ॥
जो अभ्याश करत शंकित चित कष्ट अनेक निहारी ।
युगलानन्य कर्म फल परिहरि कीजे कर्म खरारी ॥१८७॥
जो याहू के करत खेद श्रम भासे तव यों साधे ।
तन मन प्रान वपुष कृत सर्वस सियवर अरपि अराधे ॥
इष्ट कृपा बल लहे परम मुद मोद न वाधक वाधे ।
युगलअनन्य सहज कृत करि नहि काम वासना नाधे ॥१८८॥
सिय बल्लभ भल भाव निरत गुन अगुन अनूपम अद्भुत है ।
जाके सुने गुने सियवर वश होत सुपरिकर संयुत है ॥
जागे जग मग भाग राग रस विमल दिमाग सुसंद्रुत है ।
युगलानन्यशरन रशिकन गुन ऊपर श्रीमुख प्रियरुत है ॥१८९॥
चित अरु अचित विभूत इष्ट गुनि दोष दृष्टि ना दरशे ।
मित्र भाव करुना शीतल दिल ममता मलि न परसे ॥
अहंकार संसार हीन दुष सुष समान जिय सरसे ।
युगलानन्यशरन शंतत संतुष्ट पुष्ट पिय परसे ॥१९०॥
आतम विजय किये सबहीं विधि सकल प्रपंच वियोगी ।
निश्चै सुदृढ़ अचल आशन पन अशन सरस लघु योगी ॥
सकल कामना काम अरपि प्रभु रहे हमेश अशोगी ।
युगलानन्यशरन हरसायत भजन भावना भोगी ॥१९१॥

जिनते जन उद्वेग लहे नहिं आपन गहे उपाधी।
हर्षामर्ष शोक भय छय करि विगत तरंग अवाधी॥
अनघ अचाह अदाह अलौकिक अनुभव उदित समाधी।
युगलानन्य मोह भ्रम श्रम सब अफुर मानि नहि नाधी॥१६२॥
सुचि भीतर बाहर अदंभ चित दच्छ सुपच्छ प्रकाशी।
रच्छ सुतच्छ अरच्छ साम्य मति स्वच्छ अरुच्छ विलाशी॥
प्रेम पीन दुष हीन मान प्रद आप अमान सुवाशी।
युगलअनन्य रशिक ऐसे सर्वोपर धाम निवाशी॥१६३॥
व्यथा विहीन लीन मानस आरंभ अनेक विसारी।
मोद अमोद गये आये नहि तृन समान भव भारी॥
शुभ अरु अशुभ गंध त्यागे नित रित मित वचन विहारी।
युगलानन्य प्रान प्रीतम धन सब विधि श्रीधनुधारी॥१६४॥
शीत उश्न सम रहित सदन सब संग विवर्जित राजे।
निंदा सहित प्रसंश एकहीं भेद न रंचक छाजे॥
मौनी मनन शील गौनी मति छोड़ि छटा छकि भ्राजे।
युगलानन्यशरन लच्छन इह शोहत संत समाजे॥१६५॥
भार विकार असार देह निज जानि नेह तन त्यागी।
लोक अशोक निवास पाय चित चपल अचल पद रागी॥
विमल विहार विभौ दरस्यो दिल दमक दिव्य दुति जागी।
युगलानन्यशरन सोई रस रूप रशिक अनुरागी॥१६६॥
सीताराम भक्ति चिंतामनि चिद घन सुमन सम्हारो।
सकल भांति सनमानि भावनिधि सिय पिय सुवश विचारो॥

इधर उधर झांको मत सपनेहुं दृढ़ अनन्य ब्रत धारो।
युगलानन्यशरन सुभक्ति सुख ऊपर सब सुष वारो ॥१६७॥
कठिन काल विकराल जाल जगतीतल अमित निहारो।
विना विमल वर वोध भक्ति अति दुर्लभ वचन विचारो॥
साबधान शंतत रहिके श्रीभक्ति कृपा अवधारो।
युगलअनन्य विजय तेरी हर तरह सांच निरधारो ॥१६८॥
अहो अमल अनुराग तासु जेहि जन निज भक्ति पियारी।
ताके सम नहिं पूजनीय प्रिय प्रेम भवन अविकारी॥
तिनके पद पंकज पराग हित फिरत हमेश मुरारी।
युगलानन्यशरन प्रियतम सो सब विधि अवध विहारी ॥१६९॥

दोहा-विमल भक्ति कल कांति श्रीसिय वल्लभ अनुकूल।
मनन करत मंगल सदा समन संसृती सूल ॥ १ ॥

इति श्रीमधुर मंजुमालायां श्रीयुगलानन्यशरन विरचितायां
भक्तिस्वरूप निरूपनं नाम भक्ति कांतिः पंचमः ॥ ५ ॥

